JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वृद्धजनों पर उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्प्रभाव का अध्ययन

महेन्द्र प्रताप तिवारी[1], डॉ योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी[2]

[1]शोध छात्र (समाजशास्त्र) डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ0प्र0 ।

[2]एसोसिएट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र) के0एस0 साकेत पी0जी0 कालेज अयोध्या, उ0प्र0 ।

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है । वृद्धजनों की बढ़ती हुई आवादी भारत की ही नहीं, अपितु विश्वपरक चुनौती तथा समस्या है । वैज्ञानिक प्रगति, औद्योगीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण आदि प्रक्रियाओं ने सामूहिक एवं संतुलित मान्यताओं के स्थान पर व्यक्तिवादी और असंतुलित प्रवृत्तियों को प्रश्रय दिया है । सामाजिक समरसता और ताने-बाने का परंपरागत और संतुलित स्वरूप विकृत होता जा रहा है । आज बुज़ुर्गों की समस्याओं के कारणों को खोजने एवं उन कारणों पर प्रहार करने की आवश्यकता है, जिससे वृद्धजनों की संध्याबेला की समस्याओं का उन्मूलन किया जा सके । संबंधों की बंजर धरती से स्वार्थ के ही बीज उद्भूत और पल्लवित हो रहे हैं । शुष्कहृदय संतानों का वृद्धजनों के साथ व्यवहार का आधार घोर उपयोगितावादी, व्यक्तिवादी और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण है । सूचना और प्रौद्योगिकी के प्रसार ने जहाँ एक ओर संपूर्ण विश्व को एक विश्व ग्राम में परिवर्तित कर दिया है, वहीं दूसरी ओर अनेक परंपरागत मूल्यों जैसेः कर्तव्य, आस्था, प्रेम, सौहार्द आदि को ही ओझल कर दिया है । वृद्धजनों की देखभाल को नई पीढ़ी द्वारा आर्थिक घाटे का कृत्य माना जा रहा है । आज वृद्धजनों की सांध्यबेला की परिणति शारीरिक-मानसिक जीर्णता के साथ-साथ अकेलापन, विवशता, तिरस्कार आदि समस्याओं में हो रही है ।

संकेत शब्दः-

उपभोक्तावादी संस्कृति, आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण, उपयोगितावादी दृष्टिकोंण, समायोजनकारी मूल्य, प्रजननमूलक परिवार, उपयोगितावाद, प्राथमिक समूह ।

प्रस्तावना

भारत के प्राचीनकालीन व्यवस्था में वृद्धजनों को उच्च पद, प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त था । इसका उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है । औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण, आधुनिकीकरण आदि प्रक्रियाओं के कारण सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुआ है । परम्परागत मूल्यों और मान्यताओं के प्रति युवा पीढ़ी में अरुचि उत्पन्न हुई है । आज वृद्धजनों को प्रेम, सम्मान, प्रतिष्ठा, सहानुभूति आदि से वंचित होना पड़ रहा है । उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण नई और पुरानी पीढ़ी के संबंधों का अनौपचारिक स्वरूप औपचारिक स्वरूप में परिवर्तित होता जा रहा है । वृद्धों के पारिवारिक जीवन के समस्याग्रस्त होने के कारणों में सबसे बड़ा योगदान परिवार के प्रकार्यों में आया तीव्र परिवर्तन है । आज परिवार का अनौपचारिक परिवेश विघटित होता जा रहा है,क्योंकि पुराने समायोजनकारी और कर्तव्यमूलक मूल्यों का क्षरण हो रहा है । वृद्धजनों की बढ़ती आवादी के धारणीय सुरक्षा और कल्याण हेतु विशाल संसाधनों की आवश्यकता होगी । मेरे अध्ययन का लक्ष्य उपभोक्तावादी संस्कृति के आलोक में वृद्धजनों की समस्याओं के कारणों का अनुसंधान कर जीवन की संध्याबेला को सुखद बनाने हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना है ।

औद्योगिक व्यवस्था परम्परागत मूल्यों का विरोध तथा व्यक्तिवादी मूल्यों को प्रोत्साहित करता है । कृषक समाज से नगरीय एवं औद्योगिक समाज की ओर संक्रमण, संयुक्त परिवार का एकल परिवार में परिवर्तन तथा व्यक्तिवादी विचारधारा का बढ़ता महत्व वृद्धजनों की प्रस्थिति को क्षति पहुँचा रहा है ।[1] आधुनिकीकरण के आगमन से वृद्धजनों की प्रस्थिति में गिरावट आई है । औद्योगीकरण, नगरीकरण, लौकिकीकरण, व्यावसायिक विभाजन, पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार और व्यक्तिवादी विचारधारा के उदय ने परम्परागत मूल्यों तथा वृद्धजनों की सत्ता को नष्ट किया है ।[2] वृद्धजन अपनी सम्पूर्ण आर्थिक शक्ति अपने बच्चों पर खर्च कर देते हैं और स्वयं आर्थिक बदहाली से जूझने के लिए अभिशप्त होते है । परन्तु वृद्धजन अपने ही बच्चों द्वारा की गयी उपेक्षा के कारण नरकीय जीवन जीते हैं ।[3] आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर वृद्धजनों की कुछ विशिष्ट समस्याएँ हैं- निरादर, अकेलापन, अर्थिक कठिनाइयाँ आदि । आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर वृद्धजनों की समस्याएँ तुलनात्मक रूप में कम होती हैं ।[4] वृद्धजनों को जरूरतों के लिए स्वयं के संसाधनों पर निर्भर रहने की आवश्यकता है । बुढापा एक सामाजिक समस्या बन गया है क्योंकि हम समाज के लोगों को इसके लिए तैयार नहीं करते हैं।[5]

सामाजिक संरचना में परिवर्तन, व्यक्तिवादी एवं भौतिकवादी मूल्यों की प्रधानता, युवा पीढ़ी की वृद्धजनों के प्रति नकारात्मक धारणा तथा वृद्धजनों की आर्थिक क्रिया-कलापों से अनिवार्य सेवानिवृत्ति के कारण बहुत अधिक सीमा तक भारत में बुढापा एक सामाजिक समस्या बनकर उभरा है ।[6] जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के कारण वृद्धजनों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है । परिणामस्वरूप वृद्धजनों की अन्य व्यक्तियों पर निर्भरता में भी वृद्धि हो रही है । समाज में इनके देखभाल की समस्या से निपटना बहुत बड़ी चुनौती है ।[7] आज की टेक्नोलॉजी और सूचना प्रधान दुनियाँ में 'आस्था' नामक मूल्य ही विलुप्त हो गया है । ऐसे दुनियाँ में वृद्धजनों के प्रति सेवाभाव और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रश्न ही नहीं उठता है ।[8] संबंधों की धरती बंजर होती जा रही है । रिश्तों की इस धरती में व्यक्तिवादी और 'स्वार्थवादी बीज' तीव्रता से पनप रहा है । ऐसे वातावरण में वृद्धजनों के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा और सेवाभाव का ही लोप होता जा रहा है ।[9]

अध्ययन का उद्देश्यः-

प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य वृद्धजनों पर उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्प्रभाव का विश्लेषणातमक अध्ययन करना है । वस्तुतः सामाजिक शोध का उद्देश्य अस्पष्ट सामाजिक घटनाओं को स्पष्ट रूप देना, अनिश्चित तथ्यों को निश्चित स्वरूप प्रदान करना तथा सामाजिक जीवन की भ्रांत धारणाओं से संबंधित तथ्यों का शोधन करना है ।[10] प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैंः-

1. उत्तरदाताओं के संबंध में उनके रहन-सहन और जीने के तौर-तरीकों के विषय में जानकारी प्राप्त करना ।

2. वृद्धजनों का नई पीढी के साथ सामाजिक मेल-मिलाप, स्वस्थ्य अंतःक्रिया में उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन करना ।

अध्ययन क्षेत्रः-

प्रस्तुत अध्ययन के शोध क्षेत्र के लिए उ0प्र0 के प्रतापगढ़ जनपद की कुण्डा तहसील के नगर पंचायत से ऐसे 100 बुजुर्गों को उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा चयनित किया गया है जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है ।

शोध अभिकल्पः-

निर्णय क्रियान्वित करने की स्थिति आने से पूर्व ही निर्णय निर्धारित करने की प्रक्रिया को प्ररचना कहा जाता हैं ।[11] शोध अभिकल्प का निर्धारण समस्या और परिकल्पना के निर्धारण के अनुसार ही होता है । चूँकि प्राथमिक तथ्यों के आधार पर सारणीयन एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष का निगमन करना है, अतः वर्तमान अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध अभिकल्प ही उचित होगा । इस प्रकार के शोध अभिकल्प का प्रयोग ऐसे क्षेत्रों में होता है जहाँ पर समस्या से संबंधित ज्ञान का समुचित विकास नहीं हुआ है । वर्णनात्मक अध्ययन में समस्या के स्वरूप को प्रस्तुत कर उसके कारणों का पता लगाया जाता है ।

तथ्यों का संकलनः-

अनुसंधान कार्य की वास्तविक शुरुआत तथ्यों के संकलन से ही होती है । तथ्य वह वास्तविकता है जिसकी सत्यता की जाँच की जा सकती है और जिसके माप के सम्बन्ध में विद्वानों में सहमति पायी जाती है । अनुभव पर आधारित सत्यापनीय अवलोकन ही तथ्य है । तथ्यों के बिना सिद्धान्तों का निर्माण, पुनर्निमाण एवं व्याख्या असम्भव है ।[12] शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से तथ्यों का संकलन किया गया है । अनुसूची (अवलोकन तथा साक्षात्कार अनुसूची), उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि तथा प्रलेखीय स्रोतों का प्रयोग कर तथ्यों का संकलन किया गया है ।

परिकल्पनाः-

''एक अस्थायी किन्तु केन्द्रीय महत्त्व का वह विचार जो उपयोगी अनुसंधान का अधार बन सकता है, उसे हम कार्यकारी परिकल्पना कहते हैं ।''[13] वस्तुतः परिकल्पना ही वह केन्द्र है जिस पर सम्पूर्ण अनुसंधान आधारित होता है । परिकल्पना सम्पूर्ण अनुसंधान का मार्गदर्शन करता है और अनुसंधान की दिशा और दशा को तय करता है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः-

1. उपभोक्तावाद संस्कृति वृद्धजनों के उत्तरजीविता के लिए संकट है ।

2. स्वस्थ् पारिवारिक अंतःक्रिया से वृद्धजनों की समस्याओं को न्यून किया जा सकता है।

अध्ययन पद्धतिः- सत्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान की प्रक्रिया को वैज्ञानिक पद्धति के द्वार से गुजरना अपरिहार्य है । ''व्यापक अर्थ में वैज्ञानिक पद्धति तथ्यों के व्यवस्थित अवलोकन, वर्गीकरण तथा निर्वचन से निर्मित होता है ।''[14] प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति प्रकार्यात्मक पद्धति है ।

वृद्धजनों की पारिवारिक दशाः

जीवन की संध्याबेला अनेक समस्याएँ लेकर आती है । शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कमजोरी के कारण 'बुढापा' अनेक समस्याओं के दुष्चक्र में पड़कर नाना प्रकार के दुःख भुगतने के लिए मजबूर है । मानवता की इस कमजोर कड़ी के कल्याणार्थ समस्याओं के कारणों का पता लगाया जाना नितांत आवश्यक है । अपने ही परिवार में वृद्धों के तिरस्कार के कारणों का अनुसंधान परमावश्यक है । इस तथ्य की गवेषणा होना आवश्यक है कि आधुनिकता की अविवेकी दौड़ में 'मानवता' पिछे क्यों होती जा रही है । मानव समाज उपभोक्तावादी संस्कृति का आलिंगन कर 'बुढापा के तिरष्कार' के दुष्चक्र में पड़कर अपने सामाजिक प्रकृति को भूलता जा रहा है । प्रस्तुत अध्ययन से वृद्धजनों की समस्याओं के संदर्भ में ज्ञान समृद्ध होगा तथा वृद्धजनों की समस्याओं के समाधान में शासकों, प्रशासकों, समाज सुधारकों को मदद मिल सकेगी । प्रस्तुत अध्ययन से वृद्धजनों को अर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने और उन्हें प्राथमिक समूह के बीच अंतःक्रिया और समायोजन को प्रोत्साहन मिलेगा ।

सारणी 01

क्या आप परिवार में देखभाल से संतुष्ट हैं ?

क्र.सं.	संतुष्टि का विवरण ?	वृद्धजनों की संख्या	प्रतिशतता
1	पूर्ण संतुष्ट	53	53
2	आंशिक संतुष्ट और असंतुष्ट	47	47
	योग	100	100

साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि 53 प्रतिशत वृद्धजन देखभाल से पूर्णतः संतुष्ट हैं । 47 प्रतिशत सूचनादाताओं ने परिवार में देखभाल से आंशिक संतुष्टि और असंतुष्ट होने की बात की । संतुष्ट बुजुर्गों की परिवार में वित्तीय नियंत्रक की भूमिका है तथा परिवार में उनकी उचित देखभाल हो रही है । देखभाल से असंतुष्ट वृद्धजनों में अधिकतर सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग से हैं । इनमें से कुछ वृद्धजन ऐसे हैं जो पारिवार के कलुषित वातावरण में उपेक्षा के शिकार हैं । आंशिक रूप से देखभाल से असंतुष्टों में से कुछ वृद्धजनों ने स्वीकार किया कि विभिन्न समारोहों और उत्सवों पर परिवार के लोग उनसे दिखावटी प्यार करते हैं ।

सारणी 02

परिवार में आपकी देखभाल में कमी का कारण क्या है ?

क्र.सं.	असंतुष्टि का कारण ?	वृद्धजनों की संख्या	प्रतिशतता
1	संतति की अपने प्रजननमूलक परिवार की देखभाल में व्यस्तता	31	65.96
2	संतति की आर्थिक बदहाली	12	25.53
3	वृद्धजनों की आर्थिक परनिर्भरता	4	8.51
	योग	47	100

स्पष्ट है कि असंतुष्टों में सर्वाधिक 65.96 प्रतिशत वृद्धजनों की संतति अपने प्रजननमूलक परिवार की देखभाल में व्यस्त हैं । ऐसे संतति अपने प्रजननमूलक परिवार पर सहर्ष व्यय करते हैं, किन्तु परिवार के वृद्धजनों पर व्यय को घाटे का सौदा मानकर उनकी उपेक्षा करते हैं । इन वृद्धजनों का कहना है कि युवा पीढ़ी स्वयं तो आधुनिक सुख-सुविधाओं का उपभोग कर रही है, परन्तु 'हमारी' आधुनिक सुख-सुविधाओं के प्रति उदासीन है । परिवार में अमर्यादित व्यवहार, तिरष्कार और कलह के वातावरण से वृद्धों की जिजीविषा घट रही है । लगभग 25.53 प्रतिशत वृद्धजनों ने स्वीकार किया है कि संतति की आर्थिक बदहाली के कारण उनकी आंशिक देखभाल ही हो पाती है । इसी प्रकार 8.51 प्रतिशत बुजुर्गों ने स्वीकार किया कि आर्थिक परनिर्भता के कारण संतति देखभाल के प्रति उदासीन हैं । इन वृद्धजनों का कहना है कि यदि उनके पास बैंक बैलेंस होता तो संतति उचित देखभाल आवश्य करती ।

सारणी

क्या आप और परिवारजनों के बीच स्वस्थ अन्तःक्रिया होती है ?

क्र.सं.	परिवार में स्वस्थ अन्तःक्रिया होती है ?	वृद्धजनों की संख्या	प्रतिशतता
1	हाँ	43	43
2	नहीं	57	57
	योग	100	100

स्पष्ट है कि 43 प्रतिशत वृद्धजनों की परिवार के साथ स्वस्थ अंतःक्रिया होती है । ऐसे वृद्धजनों में से 'कुछ वृद्धजनों' के परिवार की माली हालत ठीक न होते हुए भी 'संतोषम् परम सुखम्' की अनुभूति होती है । ऐसे वृद्धजन स्वीकार काते हैं कि परिवारजनों का उनसे भावनात्मक लगाव भौतिक सुख-सुविधा से अधिक महत्त्वपूर्ण है । दूसरी ओर 57 फीसदी बुजुर्गों का परिवारजनों के साथ स्वस्थ अन्तःक्रिया का अभाव पाया गया । इनमें से अधिकतर ऐसे हैं जो आर्थिक रूप से परनिर्भर हैं । नई पीढ़ी उपभोगवाद और उपयोगितावाद के आलिंगन में घर के बूढ़ों पर व्यय को अवांछित और निरर्थक मानती हैं । पारिवारिक मेलमिलाप और अन्तःक्रिया से वंचित बुढापा परिवार में भावनात्मक वातावरण की चाह रखता है क्योंकि उनके लिए भावनात्मक बंधन की सुखद अनुभूति की तुलना में भौतिक सुख-सुविधा का गौण स्थान है ।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपभोक्तावादी, उपयोगितावादी और व्यक्तिवादी मूल्यों के अविवेकपूर्ण स्वीकरण से जीवन की सांध्याबेला में प्रवेशित बुढापा दैहिक और भौतिक समस्याओं के बहुआयामी दुष्चक्र में उलझ गया है । आर्थिक बदहाली और परनिर्भरता, परिवार का कलुषित वातावरण, संतति द्वारा वृद्धजनों को अनुपयोगी समझाना, पारिवारिक अंतःक्रिया और मेलमिलाप से वंचन, नई पीढ़ी की व्यक्तिवादी और उपभोगवादी प्रवृत्ति के कारण वृद्धजन बहुविधि समस्याओं को भुगतने के लिए अभिशप्त है ।

भारतीय समाज का अतीत गौरवशाली, कल्याणकारी तथा जीव मात्र के भौतिक-अभौतिक कल्याण का हिमायती रहा है । पुरुषार्थ और आश्रम व्यवस्था में मानव समाज कर्त्तव्य और अधिकार के सामंजस्य पर अवलम्बित रहा है । क्रोध, मान, लोभ और माया से मुक्ति पाकर लोक-परलोक में कल्याण की आशा पर आधारित भारत का प्रचीन सामाजिक दर्शन जीव मात्र के कल्याण का हिमायती रहा है । आज उसी भारतीय समाज में वानप्रस्थ और संन्यास के अधिकारी वृद्धजन वर्तमान के भोगवादी और उपयोगितावादी परिवेश में आर्थिक बदहाली, भावनात्मक विलगाव, असमायोजन, तिरस्कार आदि कष्टों को भुगतने के लिए मजबूर हैं । वृद्धजनों के कल्याणार्थ समाजिक और कानूनी स्तर पर सैद्धान्तिक और व्यावहारिक कदम उठाने की आवश्यकता है । वृद्धजनों के लिए पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और उनकी क्षमता और प्रकृति के अनुसार रोजगार के सृजन की आवश्यकता है । सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर प्रयास करने की अविलंब आवश्यकता है । प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त नवीन तथ्यों का उपयोग कर नए शोधकर्त्ता वृद्धजनों के सन्दर्भ में नवीन शोध कर सकेंगे, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. डिसूजा, अल्फ्रेड (1982) ''चेंजिंग सोशल सीन एण्ड इट्स इम्प्लीकेशन्स फॉर दी एजेड'' इन देसाई, के.जी. (ईडी.) एजिंग इन इण्डिया; बाम्बे, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ।

2. नायर, पी.के.बी. (1987) ''एजिंग एण्ड सोसायटीः दी केस ऑफ डेवलपिंग कंट्रीज'' इन सोशल वेलफेयर; वोल. 34, नं. 2 मई ।

3. पाती, आर. एन. एण्ड जेना, बी. (ईडीएस.) 1989 ''एजेड इन इण्डियाः सोशियो-डेमोग्राफिक डायमेंशन्स''; न्यू दिल्ली, आशीष ।

4. नाटेसन, हेमलता (1990) ''प्राब्लेम्स ऑफ दी एजेड'' इन नेशनल सिम्पोसियम ऑफ साइको-सोशल, मेडिकल एण्ड बायोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ एजिंग (अगस्त 9-10 कोयम्बटूर) ।

5. जार्ज, के.एन. एण्ड अब्राहम, सी.एम. (1991) ''वर्किंग विद इल्डर्ली पीपल इन इण्डिया'' इन सीवेल, सान्ड्रो एण्ड केली, एन्थोनी (ईडीएस.) सोशल प्रॉब्लेम इन दी एशिया पेसिफिक रीजन; ब्रिसबेन, बूलारांग पब्लिकेशन्स ।

6. मिश्रा, सरस्वती (1991) ''ओल्ड पीपल इन न्यू इण्डियन सोसायटी'' इन इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस, वोल. 4, नं. 3, जुलाई-सितम्बर ।

7. अटल, योगेश (2016) ''भारतीय समाज नैरन्तर्य एवं परिवर्तन'' दिल्ली एवं चेन्नईः पियर्सन ।

8. दीक्षित, सीमा (2016) ''वृद्धावस्था की दस्तक'' नई दिल्लीः सामयिक बुक्स ।

9. लाल, विमला (2010) ''वृद्धावस्था का सच'' नई दिल्लीः कल्याणी शिक्षा परिषद् ।

10. यंग, पी.वी. (1953) ''साइंटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च'' इण्डिया, प्रेन्टिस हॉल ।

11. एकॉफ, आर.एल., (1961) ''दी डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च'' यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस ।

12. गुडे, डब्ल्यू. जे. एण्ड हॉट, पी.के. (1952) ''मेथड्स इन सोशल रिसर्च'' न्यूयार्कः मैक ग्राहिल्स ।

13. त्रिवेदी, आर. एन. (1992) ''रिसर्च मेथोडोलॉजी'' जयपुर, कॉलेज बुक डीपो ।

14. लुण्डवर्ग, जी.ए. (1942) ''सोशल रिसर्च'' न्यूयार्कःलांगमैन्स, ग्रीन एण्ड कम्पनी ।